Volume-4, No. II, Aug-2017, pp.Hin.-06-08

मुरादाबाद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ॰ रवि कुमार
श्रीबालाजी एकेडमी, मुरादाबाद उ.प्र. भारत।

प्रस्तावना

समाज के लिए शिक्षा बहुत अनिवार्य है। कोई भी सभ्य समाज शिक्षा के बिना कभी प्रगति नहीं कर सकता है। एक शिक्षित व्यक्ति, समाज अथवा राष्ट्र ही उन्नति और प्रगति कर पाने के योग्य होता है। प्रत्येक देश अपनी विशिष्ट शिक्षा प्रणाली विकसित करता है ताकि उसकी सामाजिक व सांस्कृतिक अस्मिता को अभिव्यक्ति मिल सके और वह भविष्य की चुनौतियों का सामना कर सकें। शिक्षा प्रणाली का स्वरूप इस प्रकार का होना चाहिए कि जिससे किसी देश के नागरिकों को अनिवार्य एवं निशुल्क शिक्षा एवं स्वरोजगार परक शिक्षा जीवन व्यतीत करने वाली प्राप्त हो सकें तथा समाज के सभी लोग इससे लाभान्वित हो सके। इसके लिए शिक्षा को आवश्यकता के रूप में प्रत्येक बालक तक उपलब्ध किया जाना चाहिए। जिससे बालकों को शिक्षा प्राप्त करने में किसी प्रकार की कठिनाई न हो।

संवेग छात्रों व्यवहारों प्रदर्शन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। इस परिप्रेक्ष्य में यह जानना अति आवश्यक है कि ये किस प्रकार विकसित होते है तथा व्यक्तिगत एवं सामाजिक समायोजन, व्यावसायिक अभिरूचि तथा आकांक्षाओं का विकास भी होता रहता है। सभी संवेग जन्मजात नहीं होते हैं। उनका सतत् विकास एवं स्थिरीकरण मानव अभिवृद्धि एवं विकास के साथ–साथ होता रहता है। जन्म के समय से ही शिशु संवेगिक व्यवहारों की अभिव्यक्ति करने लगता है, जो सामान्य उत्तेजना मात्र होती है।

बाल्यावस्था का सांवेगिक विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान होता है। इस अवस्था में बालक के संवेगों की अभिव्यक्ति में सामजिकता का भाव प्रस्फुटित होने लगता है, इससे संवेगों की उग्रता में कमी आती है। सामाजीकरण के फलस्वरूप वह संवेगों का दमन करने का प्रयास करता है अथवा विशिष्ट रूप में अभिव्यक्त करता है।

सभी संवेग चाहें वे सुखकर हों अथवा दुखकर, सामाजिक अन्तः क्रिया को बढ़ावा देते है। इससे व्यक्ति अपने व्यवहार को सामाजिक आकांक्षाओं तथा मानकों के अनुरूप सुधारने का प्रयास करते है। संवेग जो बाल्यावस्था में बहुत तीव्र होते है, बालक के बड़े होने पर उनकी तीव्रता कम होती है एवं जो संवेग पहले दुर्बल होते है, उनकी तीव्रता बढ़ जाती है। यह वदलाव अंशतः बालक के बौद्धिक विकास के कारण एवं अशंतः बालक की रूचियों एवं मूल्यों में परिवर्तन के कारण होता है।

कोई बालक जैसे–जैसे परिपक्व होता है, उसकी संवेगात्मक स्थिरता, सामाजिक समायोजन, व्यवसायिक अभिरूचि तथा जीवन की आकांक्षायें भी विकसित होती जाती है। एक परिपक्व बालक स्वतंत्रता का आनन्द उठाता है जो कि अपरिपक्व व्यक्ति को उपलब्ध नहीं होता है। अपरिवक्व व्यक्ति को अधिकतर बड़े लोगों के नियंत्रण में रहना पड़ता है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

निम्नलिखित शोद्यार्थियों ने इस विषय पर शोध कार्य किया है –

पी॰ नंदा चावला (2010) ने अपने शोध अध्ययन संवेगात्मक परिपक्वता पर उम्र एवं परिवार को लेकर किशोर लड़कियों पर अध्ययन किया और पाया कि संवेगात्मक परिपक्वता पर परिवार के प्रकार का प्रभाव निश्चित पड़ता है।

कुमार, ए॰सी॰ लाल (2010) ने 574 पुरूषों तथा 531 महिलाओं पर एक अध्ययन किया।

गीता व विजयलक्ष्मी (2011) ने किशोरों पर एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन किया –

1. उच्च संवेगात्मक परिपक्वता वाले युवा निम्न संवेगात्मक परिपक्वता वाले युवाओं की तुलना में अधिक तनाव सहने करने की क्षमता तथा आत्म विश्वास रखते है।
2. युवाओं में लैंगिक भेद तनाव तथा आत्मविश्वास को प्रभावित नहीं करती है।
3. तनाव व आत्मविश्वास पर जन्म क्रम का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

व्यास (2012) ने संवेगात्मक परिपक्वता तथा विद्यालय की प्रकृति सम्बन्धी अपने एक अध्ययन में पाया कि–सह शिक्षा तथा एकल शिक्षा विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

वर्तमान समय में किशोर भी भविष्य के प्रौढ़ नागरिक है जिनके ऊपर स्वयं समाज तथा राष्ट्र एवं विश्व की सकारात्मक प्रगति करने की जिम्मेदारी है। किशोरावस्था में संवेगों की अभिव्यक्ति तीव्र होती है। इस स्थिति में उसके व्यवहारों में आमूल–चूल परिवर्तन दृष्टिगत होते हैं। माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले विद्यार्थी किशोरावस्था की पूर्णता की ओर बढ़ रहे होते है, पर संवेगात्मक रूप से पूर्णतः परिपक्व नहीं हो पा रहे है। अतः किशोरावस्था व संवेगात्मक परिपक्वता के सम्बन्ध में विभिन्न पहलुओं के बारे में ज्ञान आवश्यक है।

किशोरावस्था व्यक्ति के जीवन की वह महत्वपूर्ण अवस्था होती है, यदि उनके आस–पास के व्यक्ति चाहें वे परिसर के हों या विद्यालय के उनमें भली–भांति व्यवहार करे तो संवेगात्मक परिपक्व व्यक्ति के रूप में विकसित हो सकते है।

समस्या कथन

मुरादाबाद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन।

प्रयुक्त पदों का परिभाषीकरण

माध्यमिक विद्यालय – ऐसे विद्यालय जिनमें कक्षा 12 की कक्षायें संचालित होती हैं, माध्यमिक विद्यालय के अंतर्गत आते है।

संवेगात्मक परिपक्वता – वाल्टर के अनुसार ''संवेगात्मक परिपक्वता एक प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति अन्तर्गत एवं अन्तः व्यक्तित्व दोनों प्रकार के संवेगात्मक स्वास्थ्य को प्राप्त करने के लिए लगातार प्रयत्नशील है।''

शोध उद्देश्य –

1. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का लैंगिक आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का क्षेत्रीय आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का जातीय आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

1. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का लैंगिक आधार पर सार्थक अन्तर पाया जाता है।
2. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का क्षेत्रीय आधार पर सार्थक अन्तर पाया जाता है।
3. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का जातीय आधार पर सार्थक अन्तर पाया जाता है।

आंकड़ा संग्रहण के उपकरण

प्रस्तुत लघु शोध हेतु आंकड़ों के संकलन के लिए विद्यार्थियों से व्यक्तिगत सम्पर्क करके प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया।

न्यादर्श :–

प्रस्तुत लघु शोध हेतु 100 विद्यार्थियों का चयन करके उनके लिंग, क्षेत्र एवं जाति में वर्गीकृत किया गया।

उपकरण :–

संवेगात्मक परिपक्वता मापनी–''डॉ॰ यशवीर सिंह तथा डॉ॰ महेश भार्गव

शोध विधि

प्रस्तुत शोध हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

तालिका–1 माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का लैगिंक आधार पर सांख्यिकीय विश्लेषण

न्यादर्श	संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (S.D.)	t अनुपात	सार्थक स्तर
छात्र	50	78.1	15.32	3.23	0.05
छात्राएं	50	81.6	18.77		

उपयुक्त सारणी 1 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता का मध्यमान 78.1 तथा प्रमाणिक विचलन 15.32 है, जबकि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता का मध्यमान 81.6 तथा प्रमाणिक विचलन 18.77 है। परिगणत टी–अनुपात का मान 3.23 प्राप्त हुआ। जो कि मुक्तांश 198 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर के सारणीमान 1.96 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के सारणी मान 2.59 से अधिक है अर्थात् परिगणत टी–अनुपात से प्रदर्शित होता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक अंतर पाया जाता है। अतः उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता, छात्रों से अधिक होती है।

तालिका–2 माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का क्षेत्रीय आधार पर सांख्यिकीय विश्लेषण

न्यादर्श	संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (S.D.)	t अनुपात	सार्थक स्तर
शहरी विद्यार्थी	50	75.25	15.88	10.84	0.05
ग्रामीण विद्यार्थी	50	82.16	14.30		

उपर्यक्त सारणी 2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का मध्यमान 75.25 तथा प्रमाणिक विचलन 15.88 है, जबकि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण विद्याथियों की संवेगात्मक परिपक्वता का मध्यमान 82.16 तथा प्रमाणिक विचलन 14.30 हैं। परिगणत टी–अनुपात का मान 10.83 प्राप्त हुआ है, जो कि मुक्तांश 98 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर के सारणीमान 1.96 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के सारणीमान 2.59 से अधिक है। अर्थात परिगणत टी–अनुपात से प्रदर्शित होता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक अन्तर पाया जाता है। अतः उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले ग्रामीण विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता, शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता से अधिक है।

तालिका–3 माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का जाति आधार पर सांख्यिकीय विश्लेषण

न्यादर्श	संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (S.D.)	t अनुपात	सार्थक स्तर
पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थी	50	76.64	16.00	4.48	0.05
सामान्य वर्ग के विद्यार्थी	50	87.22	21.14		

उपर्युक्त सारणी 3 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् पिछड़े वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का मध्यमान 76.64 तथा प्रमाणिक विचलन 16.00 है, जबकि माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का मध्यमान 87.22 तथा प्रमाणिक विचलन 21.14 हैं परिगणत टी–अनुपात का मान 4.48 प्राप्त हुआ है, जो कि मुक्तांश 98 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर के सारणीमान 1.96 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के सारणी मान 2.59 से अधिक है। अर्थात् परिगणत टी–अनुपात से प्रदर्शित होता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक अन्तर पाया जाता है। अतः उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले पिछड़े वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता, सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों की अपेक्षा संवेगात्मक परिपक्वता से कम है।

निष्कर्ष

1. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का लैंगिक आधार पर सार्थक अन्तर पाया गया।
2. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का क्षेत्रीय आधार पर सार्थक अन्तर पाया गया।
3. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का जातीय आधार पर सार्थक अन्तर पाया गया।

अध्ययन का सीमांकन

प्रस्तुत शोध को मुरादाबाद जनपद तक सीमित रखा गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भारतीय जनगंणना (2001), केन्द्रिय सांख्यिकीय संगठन, कोलकाता।
2. गुप्ता एस0 पी0 और अलका (2008), उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
3. लाल, रमन बिहारी (2004), शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्वान्त रस्तौगी पब्लिकेशन, मेरठ।
4. पाठक, पी0 डी0 (2006–07), भारतीय शिक्षा और समस्याएँ, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
5. पाण्डेय रामशकल (2006–07), उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
6. पाण्डेय, के0 पी0, (2003), शैक्षिक अनुसंधान की रूपरेखा, अमित प्रकाशन, मेरठ।
7. सिहँ, अरूण कुमार (2006), मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
8. तरूण हरिवंश (2000), भारतीय शिक्षा तथा विश्व की शिक्षा प्रणालियाँ, नई दिल्ली।
9. ढौंढ़ियाल, एस0 एन0 एवं पाठक, ए0 वी0(2003),शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
10. गैरिट, हैनरी ई0 एवं बुडवर्थ आर0 (2007), शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकीय के सांख्यिकीय प्रयोग, कल्याणी पब्लिशर्स लुधियाना पेज–247।